

9) वैश्वीकरण के प्रसार ने जनवाद और सिंहाजवाद को बढ़ावा दिया है, जो वैश्वीकरण की मूलभूत संरचना से जुड़ी है। (100 marks)

देवेन्द्र एक कॉल सेंटर में काम करता है। वह रोज शाम 8 बजे अपने ऑफिस के लिए निकलता है। अपने दफ्तर में प्रवेश करने के साथ ही वह 'डेविड' बन जाता है तथा ऐसी भाषा में बात करता है जो उसी मातृभाषा अथवा समाज में बनी जाने वाली भाषा नहीं है। वह वैसे लोगों को सेवा प्रदान करता है जिससे वह डरी मिला नहीं, उसी छुड़ी भी विदेशी पैलेड से अछुदार होती है। वह स्वयं तो रात में काम करता है लेकिन उससे यादों से बिना दिन का समय होता है। काम के बदले जो वेतन मिलता है उससे वह मनपसंद विदेशी अपनी का सामान खरीदता है। साथ ही ही उसी कदन, जानकी से भी शिक्षा से लाभ-लाभ नए लोगों में रोजगार से अक्सर मिल रहे हैं।

उपरोक्त उदाहरण वैश्वीकरण से कई पहलुओं से दिखाते हैं। सामान्यतः वैश्वीकरण को एक आर्थिक अवधारणा माना जाता है लेकिन इससे बहुतसामी स्वरूप है। एक अवधारणा से रूप में वैश्वीकरण की बुनियादी बात है - प्रवाह। यै. प्रवाह कई तरह से

हो सके हैं। विश्व में यह हिस्से से  
दूसरे हिस्से में पूजा, वनदु, विचारों के  
साथ-साथ व्यवसाय एवं आजीविका हेतु  
जांगों का प्रवास वैश्विकरण के मुख्य  
तत्व हैं। यहाँ सबसे अद्वितीय बात है  
पारस्परिक जुड़ाव। यह पारस्परिक जुड़ाव  
ही दुनिया को उत्थान विलीन बनाता है।

आर्थिक हिस्सों की  
पूर्ति हेतु वैश्वीकरण का प्रसार हुआ।  
वैश्वीकरण के प्रसार ने नवउद्धारवाद,  
पश्चिमी संस्कृति व्यापक जैसी अवधारणा  
को भी प्रसारित किया। इस प्रसार  
से विभिन्न क्षेत्रों में कई प्रकार  
के लाभ प्राप्त हुए, जैसे, <sup>विदेशी</sup> निवेश  
से आर्थिक विकास भी हो तेज हुई,  
आधुनिकीकरण को बढ़ावा मिला, आधुनिक  
पश्चिमी विचारों का प्रसार हो हुआ।  
मैक्रो जैसी कुरीतियाँ अब कई माय  
में महिलाओं की सामाजिक स्थिति में  
भी सुधार हुआ।



लेकिन, वैश्वविप्लव के इस प्रसार  
ने ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न की हैं, जिनसे  
विभिन्न देशों में जनवादी एवं संरक्षणवादी  
विचारों से भी बढ़ावा दिया। इन  
परिस्थितियों से विभिन्न विचारधारा वाले  
लोगों ने भिन्न-भिन्न प्रसंग दे दिये।

वामपंथी राजनीतिज्ञ कहान  
वाले लोगों का मानना है कि वैश्वविप्लव  
के बाद असंतुलित विकास ने आर्थिक  
क्षेत्रों को और भी चौड़ा कर दिया है।  
अमीर और अमीर होता जा रहा है, गरीब  
और गरीब। भारत में सबसे अमीर 1%  
लोगों के पास देश की संपत्ति का 40%  
हिस्सा है। वंचित वर्ग को और ज्यादा  
वंचना का शिकार होना पड़ रहा है।

दक्षिणपंथी राजनीतिज्ञ कहान  
वाले लोगों का मानना है कि आर्थिक  
एवं सांस्कृतिक-साप्ताहिक क्षेत्र में  
वैश्वविप्लव का बुरा प्रभाव पड़ रहा  
है। पश्चिमी संस्कृति के अधिपत्य  
से संबंधित राष्ट्रों की पारंपारिक  
संस्कृति से घात हो रही है और

जागो अपने सहिषी दुर्गम मूल तथा  
गैर तरीकों से हाथ धोना पड़ रहा  
है।

उद्धारवादी चिंतनों का मानना  
है कि वैश्व युग से राज्य से  
संप्रभुता से चुनौती मिल रही है।

बहुराष्ट्रीय कंपनियों, जिसकी निम्न  
संपत्ति कई राज्यों के झंडे धरने  
उत्पाद से भी अधिक है, राज्यों से  
आसानी से प्रभावित हो लेती है।

इन सब के अलावा, हम  
वैश्व संध्याओं के सदैव प्रणाली से  
देखते हैं जो पार है कि वैश्व  
संध्याओं <sup>द्वारा</sup> न <sup>नहीं</sup> उद्दीमान वैश्व आर्थिक  
व्यवस्था में विश्वस्तरीय देशों के हितों  
की ध्यान में नहीं रखा जाता है।  
इन संध्याओं पर प्रामुख्य परिलक्षणी देशों  
का प्रभाव देखा जाता है।

इस प्रकार में नव-

उद्धारवाद से बढावा दिया। लेकिन कुछ  
चिंतन नवउद्धारवाद से नवसांप्रभुवाद  
के रूप में देखते हैं। उनका मानना है

कि वटुसाधनेर रुपनियाँ ईदर इंडिया कंपनी  
का ही परिपलित रूप हैं। शैक्षणिक सोशल  
पिडिया रुपनियाँ एवं बुद्धि बुद्धिमत्ता व्यक्तित्व  
स्वतंत्रता एवं निजता का हनन उदता  
हुआ पाया जाता है।

आज के डिजिटल युग में  
उता सब संसाधन के रूप में उभरा है।  
एलेक्ट्रॉनिक आधारित उपकरणों द्वारा उता का  
संचारण उपकरणों के माध्यम से बिना बिना  
जाता है साथ ही उपकरणों द्वारा उता  
का स्थानीयकरण नहीं किया जाता है। इसके  
न केवल निजता का हनन हो जाता  
है बल्कि लोड-विप्लव भी भी प्रभावित  
किया जा सकता है।

उपरोक्त सभी कारणों से  
वैश्वीकरण की प्रत्यक्ष अवधारणा 'वैश्वीकरण'  
संज्ञा संज्ञा की पुनर्गोणी दी है।  
इन्हीं पुनर्गोणियों का परिणाम है  
संरक्षणवाद, राष्ट्रवाद, देशवाद, राज्य  
द्वारा अप्रवासन नीति के कल्याण, इत्यादि।

इसका प्रभाव है-  
और उसी वन जानकी पर भी पड़ेगा।  
संसार संभव है कि जिस देश में अपनी



इं लिए देवेंद्र काय करता है उस कंपनी  
की अपने देश के लोगों की राजगार  
देने में प्रायश्चित्त देना मजबूरी हो जाए,  
फिर देवेंद्र को दयागोचर कंपनी में उस  
वेतन पर कार्य करने के लिए मजबूर  
होना पड़े जाए, परिणामस्वरूप अब वह  
अपनी पत्नीसंग भी कंपनी का सामान नहीं  
नज़दीक पारसी साथ ही उसी वहन  
जानसी को भी वैसे अच्छा उपलब्ध  
न हो जैसा पहले मिलता था।

अब तब से विवरण में देता  
प्रतीत होता है कि वैश्वीकरण अपने लोभान  
की ओर अग्रसर है लेकिन वास्तव में  
संसार नहीं है। पूरे गौर पर वैश्वीकरण  
का विरोध नहीं हो रहा बल्कि इसके  
खिलाफ पक्ष का ही विरोध हो रहा है  
जिसे साम्राज्यवाद का रूप माना जाता है-  
अथवा संबंधित देश मिल पक्ष से प्रभावित  
हो रहे हैं।

(8)3 वैश्वीकरण ने विश्वस्तरीय देशों के लिए  
परदान और आतिथ्य दोनों के लिए बिना  
है जहाँ यह विश्व है अपने परदान  
करता है वहाँ गई वैश्वीकरण का भी  
सापना उभरता है।

वैश्वीकरण एक बुनियादी अवधारणा है जिसके  
मूल में है 'प्रवाह'। यह प्रवाह कई तरह  
के हो सकते हैं, विश्व के एक हिस्से  
से दूसरे हिस्से में पूंजी, वस्तु, विचारों  
के साथ-साथ व्यक्तियों के आजीवन  
होते जाते का प्रवास वैश्वीकरण  
के मुख्य तत्व है।

वैश्वीकरण के प्रसार  
की पहल मुख्यतः विस्तृत देशों के  
द्वारा दिया गया। इनके इस प्रवास का  
मूल कारण था अपने पूंजीवादी लक्ष्य  
अर्थात् लाभ, का अधिकृत करना। इसके  
लिए नए क्षेत्र के साथ-साथ  
नए उपभोक्ता की खोज आवश्यक था।  
इस आवश्यकता की पूर्ति हेतु विश्वस्तरीय  
देशों द्वारा उद्घारीकरण, वैश्वीकरण का  
प्रसार विश्वस्तरीय देशों में दिया गया।

वैश्वीकरण के प्रसार ने  
विश्वव्यापी देशों को सहकार्य एवं  
सहकार्य दोनों रूपों में प्रभावित किया।

वैश्वीकरण के कारण विश्वव्यापी  
देशों की अर्थव्यवस्था में आपसी  
परिवर्तन हुआ। भारत के अंदरूनी में बात  
करी ली, भारतीय अर्थव्यवस्था प्रगतिशील  
व्यवस्था की ओर बढ़ने लगी। अर्थव्यवस्था  
में उद्घाटन तत्वों में दृष्टि देने लगी।  
व्यापार राज को समाप्त किया गया तथा  
सौमित्र सहकार की व्यवस्था को अपनाया  
गया। इस परिवर्तन ने भारत के  
आर्थिक विच्छेद दूर को तेज कर दिया,  
राज्यवाद के नए अवसर प्रदान किया।  
भारत में विदेशी प्रगति का आगमन प्रारंभ  
हुआ। बाजार और आर्थिक प्रतिस्पर्धालय  
हुआ जिससे उपभोक्ताओं को प्रतिक्रिया  
दूर पर बढ़ते प्राप्त होने लगी। सरकार  
ने केवल आपातकाल को ही छोड़कर अन्य  
सभी क्षेत्रों को मिनी के तहत ले लिया  
रिखा।



आर्थिक क्षेत्र में परिवर्तन ने  
 सामाजिक क्षेत्र पर भी प्रभाव डाला। नौजवानों  
 के नए अवसर ने महिलाओं के लिए  
 भी नया अवसर प्रदान दिया। कुछ  
 क्षेत्रों में तो नौजवान बहुत महिलाओं  
 से ही प्रभावित हो जाती हैं। जैसे  
 होल गैट्स। आर्थिक विकास ने सामाजिक  
जातिशीलता से बढ़ावा दिया। अब  
 जाति आधारित रूढ़ि/व्यवस्था से बाहर  
 निकलकर अन्य व्यवस्था अपनाने से ही  
 आर्थिक अवसर प्राप्त हुए।

वैश्वीकरण ने शहरीकरण  
 को भी बढ़ावा दिया। शहरीकरण ने सामाजिक  
 जातिशीलता से दूर से <sup>और</sup> दूर डिया। इस  
 कारण शहरी क्षेत्रों में जातिगत भेदभाव  
 कम होने से मिलती है।

सामाजिक क्षेत्र के परिवर्तन  
 ने मानविकता क्षेत्र पर भी प्रभाव डाला।  
 वैश्वीकरण ने पश्चिमी विचारों के प्रवाह  
 से जाति क्षेत्र से। फलस्वरूप आधुनिकीकरण  
 में तेजी आई। कन्याश्रम और अंधविश्वास  
 के जगह वैज्ञानिक दृष्टि से बढ़ावा दिया।

परंपरागत शिक्षा के जगह इंजिनाइरिंग  
 विज्ञान एवं तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा मिला।  
 लोगों के ज्ञान-पान, पहचान इत्यादि में  
 भी परिवर्तन देखने को मिला। अब  
 महिलाएं डेबल पारंपरिक कसब पहनने  
 को विवश नहीं हैं। अब के मौलिक  
 अधिकार अनुच्छेद-21 का अधिकतम उपयोग  
 कर पा रही हैं। परंपरागत मूल्यों के  
 स्थान पर आधुनिक और व्यवहारिक मूल्यों  
 को अपनाया जा रहा है। LGBT के  
 लोगों के अधिकारों से लेकर समाज  
 की धारणा बदल रही है।

इस प्रकार, वैश्वीकरण के  
 विश्वस्तरीय देशों के लिए आर्थिक विकास,  
 सामाजिक - सांस्कृतिक गतिशीलता के  
 रूप में वरदान प्रतीत होता है।

लेकिन, वैश्वीकरण ने  
 इन देशों पर केवल सकारात्मक प्रभाव  
 ही नहीं छोड़े हैं। इसके कई ऐसे  
 प्रभाव हैं जो चुनौतियाँ बन कर  
 आया हैं।

वैश्वीकरण का सर्वप्रथम  
प्रभाव राज्य की संप्रभुता पर पड़ता है।

कई बहुराष्ट्रीय कंपनियों की उच्च संपत्ति  
विकासशील देशों की सरल धरोत्रु उत्पाद  
से आधिर है। इससे अतः उन  
कंपनियों के पास लोगों का निजी  
हाल होता है। इस कारण ये कंपनियां  
राज्य की संप्रभुता के समक्ष चुनौती  
उत्पन्न करने के प्रक्षप होती हैं।

वैश्वीकरण ने भले ही  
दुनिया को एक ग्लोबल विलेज में  
परिवर्तित कर दिया है लेकिन भारत  
जैसे विकासशील देशों के समक्ष  
व्यापार घाटा, धरोत्रु उद्योग का नष्ट  
होना, राजगारविहित वृद्धि, आर्थिक  
असमानता, इत्यादि समस्याओं का सामना  
करना पड़ रहा है। इन समस्याओं  
का एक बड़ा कारण है समाजवादी  
विचार का अज्ञात होना तथा पूँजीवादी  
विचार का मजबूत होना।



सामाजिक संरचना एवं  
 अर्थिक का अंधाधुनक आधुनिकीकरण  
 का पर्याय बन चुका है। आधुनिकीकरण  
 का अर्थ, विचारों एवं व्यवहार में  
 आधुनिक होने से नहीं बल्कि, पश्चिमीकरण  
 ही गया है। यह अंधाधुनक, सर्वोप  
 देश की मूल संरचना एवं परंपरागत  
 अर्थिक विचारों एवं व्यवहारों से भी,  
 हीन भाव से देखता है। लोग अपने  
 ही संरचना से प्रति घेनता से भाव से  
 भर जाते हैं। लोग जब तब 'योग' था  
 तब तब <sup>योगों से</sup> घेनता से भावना मरी हुई थी  
 लेकिन जब यह विश्व से 'योग'  
 बनकर आया तो इसमें, लोगों से, इसमें  
 ओपता एवं व्यवहारिता नजर आने लगी।

उपरोक्त विवरण दर्शाता  
 है कि जिस प्रकार वैश्वीकरण  
 विश्वव्यापी देशों से लिए चुनौतियां  
 लेकर आता है,  
 मले ही वैश्वीकरण,  
 अपनी साथ संभावनाओं से साथ-साथ

पुनर्लिप्यां भी लाता है लेकिन  
यं पुनर्लिप्यां संभावनाओं से उद्यो-  
उद्य है। अतः अपनी रुचियों से  
वाक्यार्थ वे स्वीकृत्य संपूर्ण निश्चय से  
सह ग्लोबल सिलेज बनाने में  
सहाय है।